2019 - 20

ISSN 2394-5303

Printing® Area

Issue-63, Vol-01 March 2020

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

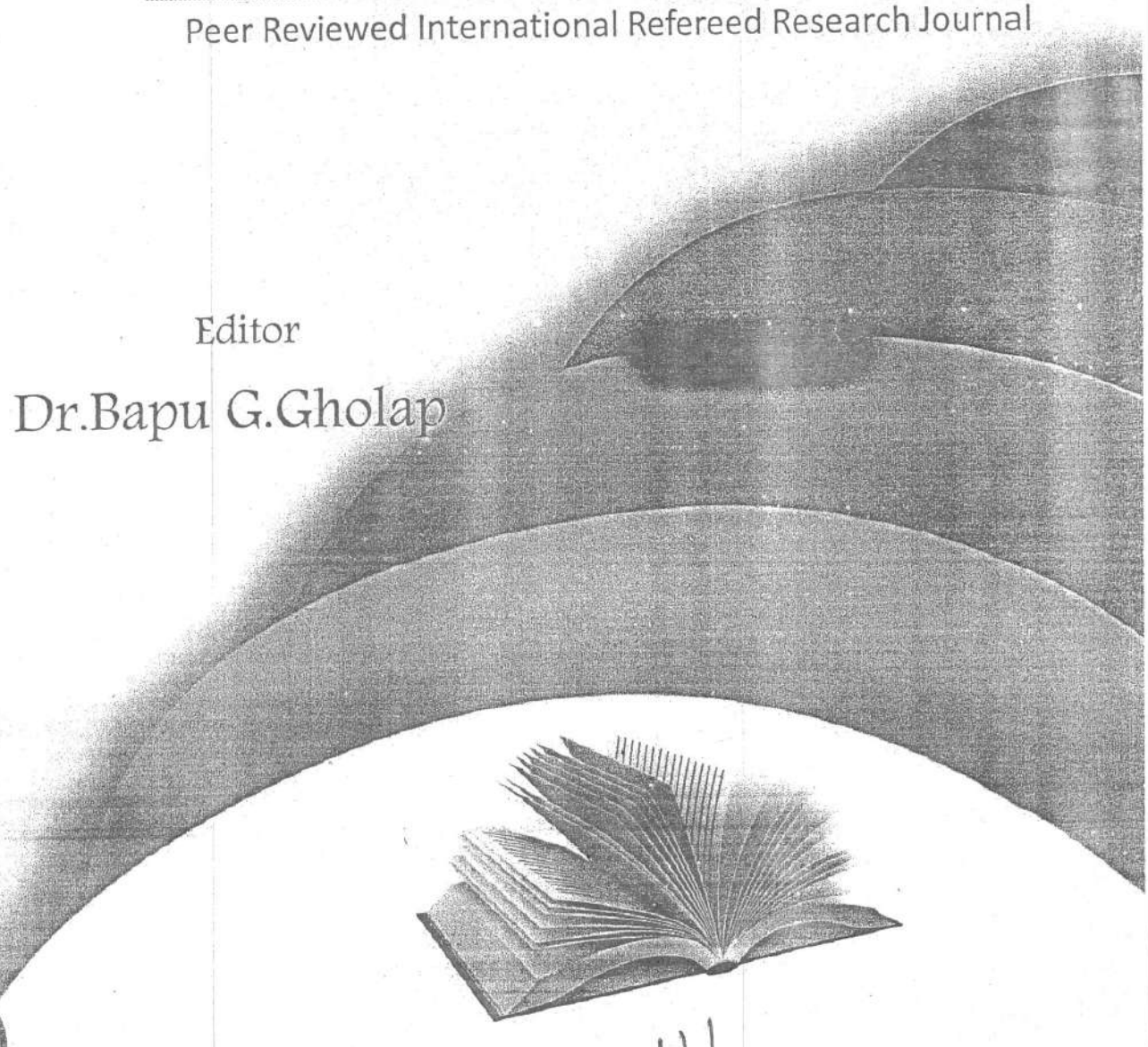

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

111

तोड़ना सबसे बड़ी हिंसा है अत: बच्चे को स्कूल जाने सपने देखने तथा खेलने की आजादी होना चाहिए। हर बच्चा एक बच्चा रहे, शिक्षा बच्चों को जिन्दगी का मतलब सिखाती है अत: यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम बच्चों को उचित शिक्षा और स्वतंत्र वातावरण प्रदान करें ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके और वह अपने देश का एक जिम्मेदार नागरिक बन सके।

❑❑❑

37

आदिवासी विमर्श

डॉ. रेखा मुले
वसंत दादा पाटील महाविद्यालय पाटोदा, ता. पाटोदा, जि. बीड

****

प्रस्तावना :-

साहित्य के क्षेत्र में आदिवासी आवाज का बुलन्द होना एक महत्वपूर्ण घटनाहै। हिन्दी में आदिवासी साहित्य की चर्चा हो रहीहै। हाशिये के समाज कभी साहित्य में आवाज नहीं बने मुख्यधारा कासंचार मध्यम् रंगीन् में खोयाहुआहै। राजनीति और पूंजीवादी साम्राज्यवाद केइशारे पर मिथकोंको जढतेहुए जनता का ध्यान बटाने में लगा है। साहित्य की दुनिया में चन्द लोग इस दिशा में काम कीया जाता है। भारत में इसे हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा में सामान्यत: आदिवासी साहित्यही कहा जाता है।

किसी भाषा के वाचिक और लिखित (शास्त्रसमुह) कोसाहित्य कहसकतेहै। दुनिया में सबसे पुराना वाचिक साहित्य कहसकतेहै। दुनिया में सबसे पुराना चंचिक साहित्यहमे आदिवासी भाषाओं में मिलता है। इस दृष्टिसे आदिवासी साहित्य सभी साहित्य का मूलस्त्रोतसाहित्य स+हित+य के- योगसे बना है।

आदिवासी के आदिवासियत को न तो आप वर्गीकृत करसकतेहै नही। किसी मानकसे नाप सकतेहैक्यों कि महतो विरासत में मिला हुआ वह गुणहै जिसे कोई भी अस्वीकार नही करसकता और नही इसे कोई खारिज करसकताहै आदिवासी साहित्य वाचिक तौर पर अपनी मूल आदिवासी भाषायों में बहुत समृध्द और विपुल है। भारत में लिखित आदिवासी साहित्य की शुरुआत बीसबी सदी के आरंभिक दौर मेहोती जब औपनिवेशिक दिनो में आदिवासी समुदाय आधुनिक शिक्षा केंसंपर्क में आतेहै। विशेषकर झारखंड और उत्तरपूर्वके आदिवासी इलाके में तबसे लेकर आज तक अँग्रेजी और हिन्दी बॉग्ला, ओडिया, असमी, मराठी आदि-अन्य भारतीय भाषाओ में आदिवासी साहित्य लेखन निरंतर प्रगती परहै। भारत में आदिवासी साहित्य पांच भाषा परिवारीक भाषाओं में वाचिक और लिखित रुप में उपलब्ध है।

साहित्य की दुनिया में चन्द लोज इस दिशा में काम कर

2019 - 20
"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 06, Issue: 05, Sept. - Oct. 2019
eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) - 5.266

स्त्री पुरुष सम्बन्ध एक ऐतिहासिक परिदृश्य

डॉ रेखा वसंतराव मुले
सहायक प्राध्यापक
वसन्तदादा पाटिल कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय
पटोदा जिला बीड, महाराष्ट्र.

नवाँ दशक स्त्री पुरुष सम्बन्धों के प्रति नवीन आयाम प्रस्तुत करता है। स्त्री पुरुष सम्बन्ध के प्रमुख आधार प्रेम काम तथा विवाह सें जुडे सवालों की पडताल करते हुए सम्भावित विकल्पों की सविस्तर चर्चा है। स्त्रीपुरुषों सम्बन्धो की विकास यात्रा का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

विश्व साहित्य की शुरुआत भले कहानियों से हुई है। बल्कि गद्य विआओं मे उपन्यास ही जीवन के परत दर पर अनुभव एवं सुख दुःख की कथा केा गहराई से व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।

स्त्री पुरुष के सम्बन्धों का आधार विवाह ही नही इतर भी है ये आधार है काम सम्बधी प्रेम सम्बन्धी तथा इतर

हिन्दी उपन्यासेंमे स्त्रीपुरुष के दापत्य एवं दाम्पत्येत्तर सम्बन्ध हर युग में किस प्रकार व्यक्त हुए है। इसके लिए हम हिन्दी उपन्यास के प्रारम्भ से १९८० तक चित्रन करेंगे सुविधा के लिये उपन्यास के कालक्रम को विभाजित किया गया है।

१.पूर्व प्रेमचंन्द युग २. प्रेमचंन्द युग ३. प्रेम चंदोत्तर युग ४. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास ५. साठोतरी उन्यास

१. पूर्व प्रेमचंन्द युग :- यहाँ पर स्त्री की बुध्दिमत्ता, कार्यपटुता व्यवहार कुशलता , विनय शीलता घर की चार दीवारी में ही सिमट जाती। प्रायः उसे अन्य स्त्री को सैतया रखैल के रुप में भी झेलना पडता। इस युग में प्रेम विवाहो को कम समर्थन विवाहितर प्रेमसंम्बन्ध पुरुषोका अमर्यादित आचर ही दिखलाई पडता है। इन सभी उपन्यासकारों केा ब्रिटिश राज का सामना करणा पडा। अतः अपनी भारतीय संस्कृति व परम्पराओं से चिपटे रहने में ही वे अपने दायित्व को पूर्ण करते नजर आना चाहते थे। उपरोक्त पंक्तिोयोंसे पत्ता चलता है कि, इस युग का लेखक स्त्रियों को पतिव्रत धर्म की शिक्षा ही देने का आकांक्षी था।

२. प्रेमचन्द युग :- हिन्दी में प्रेमचन्द के पदार्पण के पूर्व बंगल में खूब उपन्यास लिखे जा रहे थे। ये सभी उपन्यास यथार्थ जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते थे। इस उपन्यासों पर पश्चिम के लेखको का प्रभाव पडा था। प्रेमचंद युग में एक और तो भारत मे गांधीवादी विचारधारा चल रही थी। दूसरी और पश्चिम का प्रभाव भी पडा था।

स्त्रीपुरुष सम्बन्धो की समस्योओं को उन्होने भी उभारा परन्तु वे भी पुरुष को देवता रुप में चित्रित करने का मोहन त्याग सके उन्होने स्त्री सेवा त्याग, प्रेम, व समर्पण की ही माँग की है प्रेमचन्दयुग में स्त्री पुरुष

142

दोनों को पुसनी मान्यताओं में जीते बताया है। दापत्य सन्बन्धो की मधुरता के लिए प्रेम को आवश्यक बताया स्त्रीपुरुष में प्रेम व दोस्ती को प्रेमचंन्द ने महत्व दिया है। यहा स्त्रीव पुरुष सम्बन्धो में स्त्री व पुरुष की दोस्ती को प्रेम पदर्शन का नाम न देकर उसे आत्मिक भाव की परिभाषा दी गई।

दाम्पत्य की दृष्टि से प्रेमचन्द के सेवासदन, निर्मला, प्रेमाश्रम गबन और गोदान उपन्यास उल्लेखीनीय है। डा. सिन्हा के अनुसार इन सभी उपन्यासो का मूल्य स्वर नारी की यथर्थ स्थिति की पहचान उसे श्रध्दा एवं सम्मान की पात्री समझे जाने का आन्हा न है और उनकी संवेदनशील परिस्थितियों के प्रति हार्दिक सहानुभूति जागृत करने का मर्मस्पर्शी प्रयत्न है। प्रेमचन्द युग के उपन्यास दामपत्य तनाव को उकेरने में सफल हुए। परंन्तु उन तनावों का विशद चित्रण तो आने वाले दशको में हुआ है।

३. प्रेमचंदोत्तर युग १९५० तक :- नयी सामाजिक चेतना का प्रभाव स्त्री पुरुषों के सम्बधों पर भी पडा वे समान धरातलपर जीवन दिशा के चुनाव में स्वतंत्र हुए सभी लेखाकोने स्त्रीपुरुष की दमित मनोभावनाओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया । इस युग के उन्यासों मे स्त्रीपुरुष सम्बन्धो की जटिलता को गहराई से व्यक्त किया।

४. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास :- स्वतंत्र्यता के पश्चात भारत में तेजी से राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव आणे लगे। स्त्री की आत्मनिर्भरता ने उसे आत्मविश्वास दिया। वह घर में नही बाहर भी चुनौतियों का सामाना करन्ते लगी। नाम तथ धन पाने की तीव्रत्तर आकांसाओं ने उसे विवहितर सम्बन्धो की और ठकेला उसने काम सम्बन्धों से भी परहेज नही किया। परम्परा एव आधुनिकता के बील पाति पत्नी कटुतापूर्ण जिन्दगी जीने लगे। प्रेम में निष्ठा व एक के प्रति समर्पन भारतीय संस्कृति की परिमा जैसी कोई बाल नाही रही पश्चिमी प्रभाव के कारण यौन नैतिकता परिवर्तन हो गई।

५. अज्ञेय का उपन्यास:- नदी के व्दीप स्त्रीपुरुष सम्बन्धो लिये मील का पत्थर कहलाता है। इस युग में उपन्यासेपर मार्क्स के सामाजिक यथार्थ फ्रायड के अवचेतनवाद तथा सार्ग के अस्तिववाद का प्रभाव स्त्री पुरुष सम्बन्धो मे देख सकते है। स्वातत्र्योत्तर काल में आदर्श से यथार्थ परम्परा से प्रयोग की और उपन्यास करोंने लिखित बदलावों को कथ्य मे उठाया है साथ ही पति पन्ती के बीच के सम्बधो के परिवर्तित आयाम रेखांकित किया है।

६. साठोत्तरी हिन्दी उपन्या :- साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास स्त्रीपुरुष सम्बन्धो मे मोह भंग की स्थिति से आगे का वर्णन करते है। भारतीय समाज एवं साहितय मे इन दोन दशको को संक्रंमण युग की संज्ञा दिय जा सकती है। समाजवाद तथा सुधारवादी आन्दोलन जस के तस रह जये स्त्री पुरुष यथार्थ के धरातलपर जीवन

की चुनैतियों का सामना करने लगे। बदलती हुई अर्थ व्यवस्था एवं समाज व्यवस्था के कारण वैवाहिक परिस्थितीयों में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित हुए । यांत्रिक जीवन ने परम्पराओं को तोडने लगी। स्त्री की संवेदन हीनता ही इस से एकाकीपन मूल्यहीनता व अजनीबीपन ने दामपत्य जीवन में प्रवेश किया। अनेक स्त्री पुरुष से संम्बन्ध के बावजूद वैवाहिक जीवन के परिवार के लिए आवश्यक माना गया।

हम कह सकते है कि प्रेमचन्द, जैनेद्र, यशपाल अज्ञेय के युग की तुलना मे स्त्री पुरुष के सम्बन्ध रोमांटिक नत्र यथार्थ के धरातल से जडे है। यौन विकृतियों के बावजूद विविध आयामी स्त्री पुरुष को इस युग में अने कोबो से उभारा गय है।

रामधारिसिंह दिनकर ककहते है कि जो भी पुरुष निष्पाप है निष्कलंक है। निडर है, उसे प्रणाम करो, क्यो कि वह छोटा मोटा ईश्वर है।

स्त्रीपुरुष सम्बन्ध की यात्रा से गुजरते हुहे लगता है स्त्री पुरुष ने सफर तय किया है। हिन्दी उपन्यासों में स्त्री पुरुष सफर तय किया है।

हिन्दी उपन्यासों मे स्त्री पुरुष सम्बन्धो की कथाए अधिक पाई जाती है। उपन्यासों के इस विशाल क्षेत्र अर्थात काम सम्बन्धा पर प्रमाण डालने के कारण फ्रायड के विचार प्रमुख है वे सदाचर्चा के विषय बन रहै। मार्क्सवाद का प्रमाण भी जीवन के हरक्षेत्र को प्रमाणित करता है। समग्र जीवन के चिन्तन के विषय बनाता है। इसलिए स्त्री पुरुष सम्बन्धों मे इसका महत्व गौण नही है।

इस प्रकार यह दशक स्त्रीपुरुष सम्बन्धो के सूक्ष्म स्तर अनुछूई अनुभूतियों और मानव मन की गहराई की परतों की पडताल और बेबाकी का दशक है।

संदर्भ सूचि :-

१. आधुनिक कथा साहित्य और मनोविज्ञान डॉ. देवराज उपाध्याय- वासुदेव प्रकाशन बिहार
२. आधुनिक हिन्दी उपन्यासो में प्रेम की परिकल्पना डॉ. विजय- रचना प्रकाशन इलाहाकाद
३. धर्म और समाज - डॉ. राधाकृष्णन राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
४. प्रेम और नैतिकता का समाजशास्त्र डॉ. विमल हिमाचल पुस्तक भंडार दिल्ली
५. हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास डॉ. सुरेश सिन्हा लोभारती इलाबाद.

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 23 Vol. 2 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
February 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

हिन्दी भाषा और मीडिया

प्रा.डॉ. रेखा मुळे,
हिंदी विभाग, व्हि.पी. कॉलेज, पाटोदा

प्रस्तावना :-

हिन्दी भाषा हमारी राष्ट्रीयता की पहचान है । अंत्यत, कोमल सुमदुर सरल सुबोध भाषा है। हिन्दी प्रवृति मूलत: सर्वेसमावेशक है हिन्दी भारत की अधिकतम बोली जाने वाली सर्वोधिक लोकप्रियभाषा है। हिन्दी मानसिक बौध्दिक भावानात्मक आध्यत्मिक दर्शेनिक रुप में पूर्ण स्वस्थ है।

मीडिया की कथा बडी रोचक सुखद एवं सुखांत है। वह सृष्टि के आदि से संकेत बोली चित्र, चित्र भाषा लिपि पत्र, सूचना पत्र पुस्तक, समाचार, पत्रोंसे, सिनेमा, रेडिओ, टेलीविजन, कम्प्यूटर्स सैटेलाइट तक से लैस सुसज्जित सम्पूर्ण विश्व के जनमानस का श्रृंगार करती प्रतिनिधित्व करती है। मीडिया का मनोरंजन का आकर्षण उपयोगिता का चतुर्दिक विकास का है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया ने जनमानस एवं साहित्यकार वर्ग की चिन्तन धारा को विशेष प्रभावित किया है। भारतीय आचार संहिता को विशेष रुप से प्रभावित किया है। इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा साहित्स में समन्वय आडा की आवश्यकता है। मीडिया आज विज्ञान का प्रदर्शन नहीं अपितू सूचना के क्षेत्र में नयी क्रांती है। मीडिया साहित्य की मुलभूत एकता उसकी भारतीयता परक गरिमा को दिनदिन धूमिल करती जा रही है।

मीडिया से किसी भी सत्य की तह तक पहुँचना सहज हो सकता है परंतु उसके उर्जा संपन्न मानव मस्तिष्क की आवश्कता है। मानव सभी प्राणी जंगल में सर्वेश्रेष्ठ है। उसकी बुध्दि तथा चेतना उसे अन्य प्राणी जगत में अलजाती है। मनुष्य की इन विशेषताओं ने उसे धार्मिक सांस्कृतिक राजनितिक, सामाजिक , आर्थिक आदि अनेक कार्ये क्षेत्रो में सक्रिय किया है। धीरेधीरे उसका विस्तार हो गया और इस विस्तार में मीडिया की अहम भूमिका रही है। मीडिया माहयमों मे समाचार पत्र, पत्रिकॉए रेडिओ, टी.व्हि. आदि प्रमुख है।

हिन्दी कीसंप्रेक्षण क्षमता अतुलनीय है। संप्रेक्षण हमारे वातावरण के साथ शरीरिक मानसिक और सामाजिक स्तरपर एक प्रकार की अन्त: क्रिया है। मीडिया के रुप में प्रचलन में एक है। प्रिन्ट मीडिया दूसरा है इलेक्ट्रानिक मीडिया आजकल हिन्दी का प्रसार वैश्विक व्यावसायीकरण के कारण निरन्तर हर तरफ हो रहा है।

स्पष्टीकरण :-

मीडिया में हिन्दी का प्रयोग लाभदायकता के कारण ही बढ रहा है। जनसंचार माध्यमों ने हिन्दी की अभिव्यक्ति क्षमता को निरन्तर बढाया है। हिन्दी जनचेतना को स्वर देने में सर्वोधिक समर्थ होकर धीरे धीरे भाषा बन गयी है।

आज मीडिया की भाषा का निर्माण हो रहा है। इतना ही नहीं औद्योगिकी सहायता से ही कोई भी भाषा फलफूल सकती है। भारत में दरिद्रता, निरक्षरता, भाषिक विविधता तथा अंग्रेजी के प्रति अनावश्यक रुझान और सॉफ्टवेअर कंपनियों व्दारा अंग्रेजी सॉफेटवअर बनाने के कारण हिन्दी की सूचना एवं औद्योगिक के क्षेत्र में अपेक्षित विकास नही हुआ। लेकिन आज स्थितियाँ संतोषजनक है। आज सूचना एवं औद्योगिक के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग दिन व दिन बढता जा रहा है। विभिन्न व्यावसायों कार्यालयों बँको, रेल, डाक तार विज्ञापन, दूरदर्शन , टेलिप्रिंटर, फॅक्स, करप्यूटर इंटरनेट आदि अनेक क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोजन हो रहा है।आज हमे पूरा विश्वास है कि अगर इसी गति के साथ विकास होता रहा है । हिन्दी जनसंचार माध्यमों की दृष्टि से विश्व की सबसे प्रभावी भाषा है।

आज उपभोक्तावादी संस्कृति और बजारवाद का बोलवाला होने के कारण विश्व में पारस्पारिक आदानप्रधान और संपर्क के लिए नवीन भाषाई संस्कृति के विकास की संभाव नाएँ है। बढती जा रही है। आज हिन्दी की व्यापकता दिखाई देती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रिंट मीडिया सिनेमा तथा चॅनलों की चकाचौध ने हिन्दी को एक नया क्षेत्र प्रधान किया है । इसी लिए धर्मे दर्शन आध्यात्म सहित बच्चों के लिए तरह तरह के मनोरंज व ज्ञानवर्धक कार्येक्रमो को डब करके हिन्दी में प्रसारित कर रहे है। हिन्दी फिल्में देश में नही विदेशों में भी बहुत पसंद की जाती है।

प्रिंट मीडिया तो इलेक्ट्रानिक मीडिया से भी आगे बढता हुआ नजर आता है। देश के प्रमुख समाचार पत्र पत्रिकाओ के ऑनलाइन संस्कारणो के कारण हिन्दी पत्रकारिता में संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनो दृष्टीयोंसे वृध्दि हो गयी है। हिन्दी की दुनिया केवल अपने देश तक ही सीमित नहीं विश्वस्तर तक फैलचुकी है।

भाषा प्रयोग में टेलिविजन से भले किसी भी रुप में शब्द वाक्य ध्वनि के साथ भाषा का जो असर देखा गया है। बिभिन्न जनसंचार माध्यमों के दोन प्रकारो में विभाजित किया जा सकता है। 1.मुद्रित माध्यम 2. इलेक्ट्रानिक माध्यम मीडिया के इन दोनों प्रकारों मे कमप्यूटर का प्रयोग हो रहा है। डाक (पत्र) आज भी प्रभावी मीडिया के रुप में दिखाई देता है।

मीडिया सें संबंधित विभिन्न कर्यो के लिए कमप्यूटर का उपर्योग बढता ही जा रहा है। आज मीडिया ओर कमप्यूटर दोनों का संबंध चोली दायन सा बन गया है। निश्चय की मीडिया के क्षेत्र में कमप्यूटर अपनी उपयोगिता सिध्दकर चुका है।

हिन्दी भाषा की बढती लोकप्रियता को मीडियाने हाथोंहाथ लिया है। हिन्दी भाषा की लोकप्रियता दिन प्रति दिन बढ रही है वर्तमान का सच मीडिया को अपने विस्तारके लिए हिन्दी की आवश्यकता है।साहित्य समाज का आंईना है। इस परिप्रेक्ष में अगर कहै कि आज के तत्कालीन

समय में सिनेमा समाज का आईन है। तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी मीडिया और फिल्मों का संबंध शरीर और आत्मा सा है। आज मीडिया एक शक्तिशाली भूमिका निभा रहा है।

वीडिया अब पूरा फिल्मी संसार श्रोताओ के मकान में जैसे की वैसा रखने का प्रयास कर रहा है। मीडिया समाज में निभा रहा है। नागरिक जब कर्तव्यनिष्ठा सारासार विवेकता एवं सामाजिक कर्तव्य का दायित्व करने वाला हो तो मीडिया परिणाम करता है।

फिल्म में मीडिया का संबंध शिक्षा ज्ञान के प्रसार तथा जनता में पढने की रुचि के बढने से नये नये पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी। मीडिया और फिल्म का संबंध सेतुतात्मक है।

मनोरंजन विश्व में मीडिया की भाषा और उसकी संरचना अपना एक शास्त्र प्रतिपादित करने हेतु भाषा वैज्ञानिक को मजबूर करवा रहा है। इसके लिए सर्वसामान्या सिध्दांत स्थापित नही हुआ संचार की भाषा के अलग-अलग स्वरुपों विविध विवेचन तथा विश्लेषण और मानक रुप निर्धारण के बिना मीडिया की पहचान होना बहुत ही कष्टयुक्त है।

मीडिया की दुनिया संवेदनों की यात्रा में समाज की नयी परम्परागत रुठीयाँ नये मूल्यों की परिवर्तित स्थिति और परिवेश के सामने पेश कर रही है। सामाजिक परिवेश में मनोवैज्ञानिक भाषा संस्कृति और बदले विश्व परिदृश्य की स्थितियों का आकनल करते हुये मीडिया का समाज पर प्रभाव स्वीकार करना ही पडता है। मीडिया एक साधन है पर वहं साध्य बनता जा रहा है । मीडिया का लाईव्ह शब्दने हमारे जिंदगी में हलचल निर्माण करती है। मीडिया समाज में कब्ज बिगड जाये इसका खयाल अगर मीडिया रखेगा तो समाज का स्वास्थ बिलकूल ही तंदुरुस्त रहेगा। मीडिया आज पूरे मानव जाति पर हावी हो गया है।

निषकर्श :-

मीडिया आज की उपभोक्तावादी संस्कृती का महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन अंग अज मनुष्य की अभिव्यक्ति के संप्रेषण का काम नही करता अपितु उपभोक्तावाद और बाजारवाद को बढावा देता रहा है। मीडिया मनुष्य की जिंदगी में जरुरत से ज्यादा अंदाजी करता जा रहा है। मीडियो मनुष्य की जिंदगी में जरुरत से ज्यादा अंदाजी करता जा रहा है। मीडिया समाज का मार्गदर्शक है मीडिया आज सशक्त है वह तीसरी ऑख है। आज मीडिया हमारी पूरी पीढी को भोग लिटसा सेक्स में डूबाकर भोगवादी बना रहा है। हमें इसे रोकना होगा। विवध मीडिया के साधनो की दृष्टी से हिंदी बहुत महत्व पूर्ण है।आज मीडिया का महत्व दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। यही नही इस क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएँ भी विकसित हो रही है। इसी का परिणाम है कि अनेक विश्वविआलयों में साहित्य के साथ ही मीडिया को वैकल्पिक विषय के रुप में पढाया जाता है। मीडिया के जरिये गवर्नेस यानी की बेहतर प्रशासन के रिश्ते को स्थापित करने की कोशिश दिखाती है। भारत में मीडिया के प्रसार को काफी दिन हो गये है। इस की पहुँच भारत मे 70 फिसदी लोगो तक पहुँच गई है। मीडिया ने जितनी तेजीसे यह प्रसार हासिल किया है। मीडिया ने जितनी तेजीसे यह प्रसार हासिल किया है मीडिया के माध्यमसे चाहे वह रेडिओ ब्लॉगिंग होया डबिंग तथा इंटरनेट पर हार्डवेअर एवं सॉफ्टवेअर हो इन सब का महत्वपूर्ण स्थान है। इस तरह मीडिया और विकास गहेरा संबंध है। इसी के कारण पूंजीवाद, बाजारवाद व्यक्तिवाद को आश्रय मिला है। वर्तमान मे यह मीडिया हिन्दी भाषा विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आज आमसे आम आदमी मीडिया के व्दारा हिन्दी के माध्यमसे एक दूसरे से जुडा है। तथा व्यक्तिगत संबंध समाचारों के साथ साथ देश दुनिया की खबरों से भी वाकिकफ हो रहा है। निःसंदेह हिन्दी की इस क्रांतिकारी पहल ने उसकी उपयोगिता को अंतरराष्ट्रीय स्तरपर साबित कर दिखाया है।

हिन्दी भाषा ज्यादातर लोंगोव्दारा बोलीजाने के कारण देश के विकास के लिए हिन्दी भाषा का ज्यादा प्रचार प्रसार होगा उतना ही देशहित के लिए लाभदायक होगा प्लेसबुक, व्हाट्सअप, फिलमों, रेडिओ, धारावाहिक काहानियों विश्वसम्मेलनो , दैनिक अकबार आदि के माध्यमसे देश विदेश के लोग एकजुट होग। इससे देश की उन्नति होने के लिए हिन्दी भाषा की अहम भूमिका हो सकती है।

संदर्भ सूचि :-

पत्रिकाएँ- 1.साहित्य अमृत, समीक्षा संचारिका, भारतीय सहित, लोकयज्ञ मीडिया लेखन, डॉ. चंद्रकांत मिश्र, प्रिन्ट मीडिया लेखन प्रो रमेश जैन, संचार माध्मोमे हिन्दी का प्रयोग : दादासाहेब गौरे

2. इंटरनेट व्दारा जानकारी प्राप्त

3. मीडिया और हिन्दी साहित्य.